गुंजा की नौ नई प्रजातियाँ छत्तीसगढ़ के वनो मे

* 35 से अधिक रोगों के उपचार में पारंपरिक उपयोग

* रत्नो की उपस्थिति पता करने मे गुंजा का उपयोग

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण में जुटे हुये वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य के वनों मे गुंजा की नौ ऐसी प्रजातियाँ उपलब्ध है जिनका वर्णन संदर्भ साहित्यो मे नही मिलता है। इन सभी प्रजातियों को एब्रस प्रीकेटोरियस के नाम से पहचाना जाता है पर वनों मे एब्रस पल्चेल्लस जैसी उपयोगी प्रजातियाँ भी पायी जाती है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में किये जा रहे एथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि आमतौर पर गुंजा जिसे रत्ती भी कहा जाता है , के बीज सफेद या लाल रंग के होते है। इनमे सफेद रंग के बीजों वाले पौधों को अधिक उपयोगी माना जाता है। छत्तीसगढ़ के वनों मे विभिन्न रंग के बीजों के आधार पर नौ प्रजातियों के पौधे उपलब्ध है। भिन्न-भिन्न रंग के बीजों का प्रयोग राज्य के पारंपरिक चिकित्सक अलग-अलग रोगों की चिकित्सा मे करते है। पौध भागों मे भिन्नता के आधार पर 4 प्रजातियाँ वनो मे उपलब्ध है। राष्ट्रीय बाजारों मे गुंजा की आपूर्ति एब्रस प्रीकेटोरियस के नाम से की जाती है , जबकि आपूर्ति मिली - जुली प्रजातियों की होती है। सर्वेक्षणों और अध्ययनों से यह भी ज्ञात हुआ कि राज्य मे गुंजा के अविवेकपर्ण दोहन से बहुत से भागों से यह वनौषधि समाप्त होती जा रही है। गुंजा की संख्या कम होने के कारण इसका दुष्प्रभाव बड़े वृक्षों पर भी पड़ रहा है। गुंजा के पौध भागों से बहकर बड़े वृक्षों तक पहुंचने वाला जल वृक्षों की वृद्धि मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पंकज अवधिया का सुझाव है कि राज्य के संवेदनशील क्षेत्रों मे गुंजा के एकत्रण पर कुछ वर्षो तक प्रतिबंध लगाकर इसकी घटती संख्या पर अंकुश लगाया जा सकता है। राज्य मे गुंजा के औषधि उपयोगों के विषय में पारंपरिक ज्ञान समृद्ध है। पारंपरिक चिकित्सक 35 से अधिक रोगों की चिकित्सा मे गुंजा के पौध भागों का प्रयोग करते है। 80 से भी वनौषधीय मिश्रणों मे गुंजा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दक्षिण छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक गुंजा की जड़ की सहायता से उन लोगों को पुर्नजीवित (अल्प समय के लिये) करने का दावा करते है जिन्हें कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति मृत घोषित कर देती है। तंत्र क्रिया से जुड़े लोगों के बीच भी गुंजा का प्रयोग लोकप्रिय है। गुंजा की पत्तियों में पायी जाने वाली शक्कर से 50-80 गुना अधिक मिठास ने इसे स्टीविया जैसे दुष्प्रभाव पूर्ण पौधे के सशक्त भारतीय विकल्प के रुप मे स्थापित कर दिया है। राज्य के उन क्षेत्र, जहाँ गुंजा प्राकृतिक रुप से उगता है, के किसान फसलों की सुरक्षा के लिये इसको विभिन्न पौध भागों का प्रयोग करते है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक गुंजा के विभिन्न रंगो वाली प्रजातियों की प्राकृतिक उपस्थिति की सहायता से उन भूमि मे पाये जाने वाले रत्नों की भविष्यवाणी करते है। यह पारंपरिक ज्ञान उनके बीच लोकप्रिय है। राज्य के हीरा बहुल क्षेत्रों मे गुंजा की प्राकृतिक संख्या विशेष रुप से अधिक है। यद्यपि इस पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक प्रमाणिकता नही मिली है पर पंकज अवधिया का मानना है इस ज्ञान की लोकप्रियता इसकी उपयोगिता की परिचायक है। इन पर पर्याप्त शोधों की आवश्यकता है। साथ ही गुंजा की नई प्रजातियों की वैज्ञानिक पहचान कर इनके संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता है ताकि भविष्य मे गुंजा की नई जातियों के विकास मे इन प्रजातियों का उपयोग किया जा सके।